

हिमाचल प्रदेश सरकार-आय व व्यय के साधन

(i) बजट

एक वित्तीय वर्ष में सरकार के आय व्यय के वितरण को बजट कहते हैं। वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च तक होता है। राज्य की विधानसभा बजट पास करती है। सामान्यतः यह सत्र फरवरी-मार्च में होता है। वर्ष 1992-93 का बजट यहां प्रस्तुत किया जाता है।

हि.प्र. का बजट-1992-93 राजस्व एवं पूंजी लेखा (राशि करोड़ रु० में)

क्र. सं.	आय की मदें	अनुमानित आय	क्र. सं.	व्यय की मदें	अनुमानित व्यय
1.	प्रारम्भिक शेष	-199.00	1.	राजस्व	1125.70
2.	राजस्व	1010.00	2.	पूंजी व्यय	212.50
	पूंजीगत लेखा प्राप्तियां				
3.	उधार (वसूलियां)	7.40	3.	उधार दिए	34.50
4.	लोक ऋण (लिए गए)	242.3	4.	लोक ऋण (लौटाए)	149.50
				अन्तर्राज्य निपटान सहित	
5.	जमा, अग्रिम व विप्रेषण		5.	योग व्यय	1522.20
	और भविष्य निधि	61.8			
6.	जोड़ प्राप्तियां	1321.50	6.	अन्तिम शेष	(-) 399.70
	जोड़ (6 + 1)	1122.50	7.	योग	1122.50

स्रोत : अर्थ व सांख्यिकी निदेशालय, शिमला : संक्षिप्त बजट 1992-93

(रकम लगभग है। दस लाख तक की रकम नहीं ली गई)

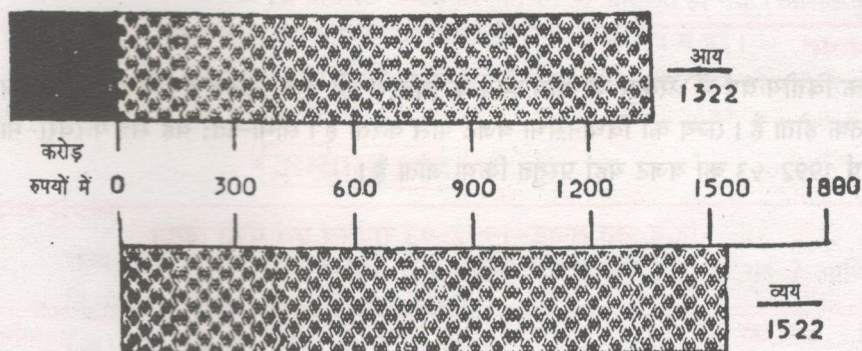
घाटा : इस वर्ष के बजट के शुरू में पिछले वर्ष का घाटा 199 करोड़ रु० था। दूसरे शब्दों में, वर्ष 1991-92 में व्यय आय से 199 करोड़ रु० अधिक हुआ। इस वर्ष में भी लगभग 200 करोड़ रु० का व्यय अधिक है। इस प्रकार चालू वर्ष में कुल घाटा 399 करोड़ रु० का है। गत वर्ष घाटे का बजट अनुमान 115 करोड़ रु० था परन्तु संशोधित अनुमानों के अनुसार यह 199 करोड़ रु० हो गया। अतः यह कहा जा सकता है कि वास्तविक घाटा इस वर्ष 400 करोड़ रु० से अधिक ही होगा। कारण या तो व्यय अनुमान से अधिक हो जाएगा या फिर आय अनुमान से कम हो जायेगी। दूसरे शब्दों में, आय से व्यय की अधिकता घाटा कहलाती है।

आय : वर्ष 1992-93 में सरकार की कुल आय लगभग 1321 करोड़ रु० होगी। इसमें से प्रारम्भिक शेष (-) 199 करोड़ की राशि निकाल देने पर शुरू आय लगभग 1122 करोड़ रु० होगी। आय को मुख्यतः दो भागों में राजस्व खाता व पूंजी खाता में बांटा जाता है। इस वर्ष राजस्व खाते 1010 करोड़ रु० प्राप्त होंगे। पूंजी लेखा से लगभग 311 करोड़ रु० प्राप्त होगा। लगभग 62 करोड़ रु० भविष्य निधि व जमा व अग्रिम से प्राप्त होगा। शेष लगभग 7 करोड़ रु० उधार वसूली से प्राप्त होने का अनुमान है।

व्यय : चालू वर्ष में कुल व्यय 1522 करोड़ रु० होगा। इसमें राजस्व लेखा में 1125 करोड़ व शेष पूंजी लेखा में 397 करोड़ रु० होने का अनुमान है। इसमें लगभग 150 करोड़ रु० के ऋण लौटाये जायेंगे।

समस्त बजट—1992-93

आमिषक शेष



जनता को लगभग 35 करोड़ रु० के ऋण दिए जाएंगे शेष 212 करोड़ रु० पूंजी गत कार्यों पर व्यय होंगे।

राजस्व प्राप्तियां

राजस्व प्राप्तिओं में मुख्यतः तीन से धन प्राप्त होता है।

(अ) करों से आय (ब) गैर-कर राजस्व (स) सहायता अनुदान

करों से आय : करों से आय को भी दो भागों में बांटा जा सकता है (1) केन्द्रीय करों का भाग (2) हिमाचल सरकार के अपने कर।

(2) केन्द्रीय करों का भाग : कुछ कर ऐसे हैं जिन्हें भारत सरकार लगाती है एवं वही कर इकट्ठा करती है। परन्तु इस राशि के 3/4 से भी अधिक भाग को राज्यों में बांट दिया जाता है। इन करों में तीन प्रमुख कर शामिल हैं—(i) केन्द्रीय उत्पादन शुल्क—यह कर कपड़ा, चीनी, सीमेंट, लोहा इस्पात, कागज, दियासलाई आदि के उत्पादन पर लिया जाता है। हिमाचल प्रदेश को इस वर्ष कर के भाग के रूप में लगभग 211 करोड़ रु० प्राप्त होने का अनुमान है। (ii) सम्पदा शुल्क समाप्त कर दिया गया है। (iii) आयकर—इस मद से इस वर्ष राज्य को लगभग 30 करोड़ रु० प्राप्त होने का अनुमान है। इस प्रकार केन्द्रीय करों के भाग के रूप से इस वर्ष राज्य को लगभग 241 करोड़ रु० प्राप्त होंगे जो कुल राजस्व आय का 23.8 प्रतिशत है। दूसरे शब्दों में एक रुपये की आय में लगभग 24 पैसे केन्द्रीय करों से भारत सरकार द्वारा प्राप्त होते हैं।

2. हिमाचल सरकार के अपने करों से प्राप्तियां : चालू वर्ष (1992-93) में राज्य सरकार को अपने करों से लगभग 200 करोड़ की प्राप्तियां होने का अनुमान है। यह कुल राजस्व प्राप्तिओं का (19.8 %) है। राज्य करों से दो मुख्य हैं—बिक्री कर एवं राज्य उत्पादन शुल्क। विभिन्न करों से प्राप्त आय का विवरण इस प्रकार है।

(i) भू-राजस्व : राजतन्त्र व रियासतों के समय भू-राजस्व ही सरकार की आय का प्रमुख स्रोत होता था। तब सरकार, उद्यम, व्यापार, परिवहन जैसे आर्थिक कार्यों में भाग नहीं लेती थी। हिमाचल में

लोकप्रिय सरकार बनने के बाद छोटी व अनार्थिक जोतों पर भू-राजस्व समाप्त कर दिया गया। अतः इस मद से प्राप्त आय, में कमी आई। 1992-93 में भू-राजस्व से 62 लाख रु० की राशि प्राप्त होने का अनुमान है।

(ii) **पंजीकरण व स्टाम्प शुल्क** : किसी भी सम्पत्ति के क्रय व विक्रय के समय रजिस्ट्री कराई जाती है। जो स्टाम्प पेपर पर होती है। इस मद से चर्चित वर्ष में 6.4 करोड़ रुपए की प्राप्ति का अनुमान है। 1971-72 में इस मद से 60.5 लाख की आय हुई थी। इस मद से आय लगातार बढ़ रही है। औद्योगिकरण, पर्यटन के लिए अधिकाधिक होटल बनाने के काम से इस आय में वृद्धि होने का अनुमान है। परन्तु जब तक हिमाचल प्रदेश से बाहर के लोगों को यहां भूमि खरीदने की अनुमति नहीं मिलती, इस मद से आय में विशेष परिवर्तन की सम्भावना नहीं है। परन्तु राज्य की गरीब जनता के हितों को सुरक्षित रखने हेतु भूमि को बाहरी व्यक्तियों को बेचने पर पाबन्दी है।

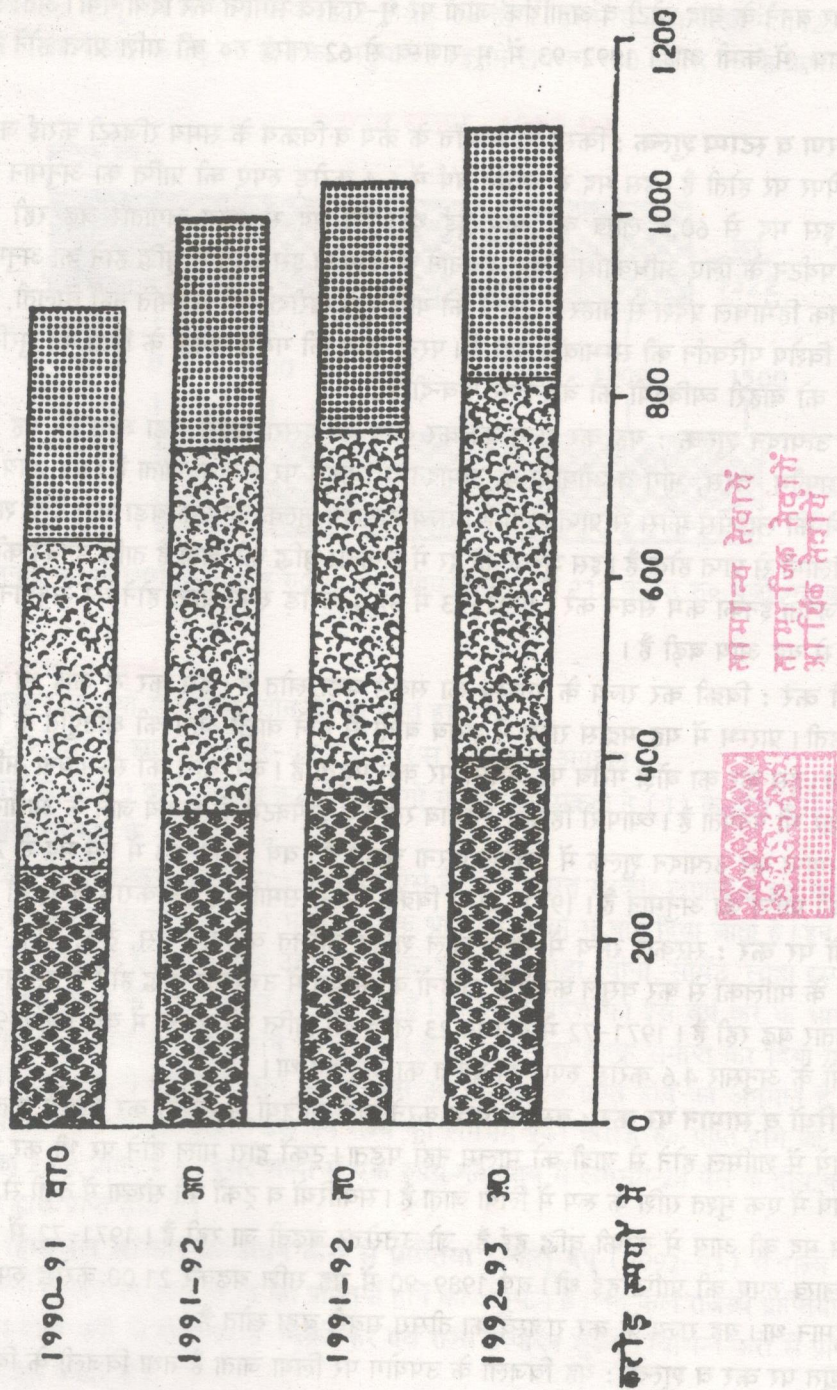
(iii) **राज्य उत्पादन शुल्क** : यह कर राज्य की कर आय का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत है। यह कर नशीले पदार्थ अफीम, चरस, भांग व औषधियों के उत्पादन व विक्रय पर लगाया जाता है। यह आय इन पदार्थों के बेचने की लाइसेंस फीस से प्राप्त होती है। राज्य उत्पादन शुल्क का एक बड़ा भाग देशी शराब के ठेकों की नीलामी से प्राप्त होता है। इस शुल्क की दर में लगातार वृद्धि की जाती है ताकि इनकी कीमत अधिक हो व जनता इनका कम सेवन करे। 1992-93 में 67.4 करोड़ रुपए प्राप्त होने का अनुमान है। उत्तरोत्तर वर्षों से यह आय बढ़ी है।

(iv) **बिक्री कर** : बिक्री कर राज्य के राजस्व का सबसे बड़ा स्रोत है। इस कर से कोई भी वस्तु वंचित नहीं रहती। प्रारम्भ में यह मद्रास राज्य में शराब बन्दी से होने वाली आय की क्षतिपूर्ति के लिए लगाया गया था। इस कर का बोझ गरीब पर अमीरों पर कम पड़ता है। कर चोरी की सम्भावना अधिक होने से भ्रष्टाचार भी पनपता है। व्यापारी हिसाब-किताब रखने व इन्स्पेक्टरों से सजाये जाने के आधार पर इस कर को समाप्त कर उत्पादन शुल्क में शामिल करना चाहते हैं। वर्ष 1992-93 में इस मद से 77.2 करोड़ रुपए की प्राप्ति का अनुमान है। 1971-72 में बिक्री कर से समाप्ति 2.25 करोड़ रुपए थी।

(v) **वाहनों पर कर** : सरकार राज्य में चलने वाले शक्ति चालित वाहनों (बस, ट्रक, जीप, कार, स्कूटर आदि) के मालिकों से कर वसूल करती है, वाहनों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होने से इस मद की आय भी लगातार बढ़ रही है। 1971-72 में लगभग 23 लाख की प्राप्ति की तुलना में वर्ष 1989-90 में बजट अनुमानों के अनुसार 4.6 करोड़ रुपए की प्राप्ति का अनुमान था।

(vi) **सवारियों व सामान पर कर** : बसों में यात्रा करने वाले यात्रियों से सवारी कर वसूला जाता है। यह कर किराये में शामिल होने से यात्री को मालूम नहीं पड़ता। ट्रकों द्वारा माल ढोने पर भी कर लिया जाता है जो वर्ष में एक मुश्त राशि के रूप में लिया जाता है। सवारियों व ट्रकों की संख्या में तेजी से वृद्धि के कारण इस मद की आय में काफी वृद्धि हुई है, जो उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। 1971-72 में इससे लगभग 95 लाख रुपए की प्राप्ति हुई थी। वर्ष 1989-90 में यह राशि बढ़कर 21.00 करोड़ रुपए हो जाने का अनुमान था। यह राज्य के कर राजस्व का तीसरा सबसे बड़ा स्रोत है।

(vii) **विद्युत पर कर व शुल्क** : यह बिजली के उपयोग पर लिया जाता है तथा बिजली के बिल में शामिल होता है। 1974-75 से यह कर प्रारम्भ किया गया था। तब इससे केवल 50 हजार रुपए प्राप्त हुए थे। 1989-90 में इस मद से 3.3 करोड़ रुपए प्राप्त होने का अनुमान था।



नोट:- तहाय अनुदान और जंढान काणय हे।

(viii) अन्य कर : मनोरंजन आदि कुछ अन्य छोटी मदों से 1971-72 में 65 लाख रुपए प्राप्त हुए थे। 1990-91 में 41.00 करोड़ रुपए की प्राप्ति का अनुमान है। मद संख्या (iv) से (vii) तक से 1990-91 में लगभग 45.00 करोड़ रुपए प्राप्त होने का अनुमान है।

(ब) गैर-कर राजस्व

वर्ष 1991-92 में गैर-कर राजस्व से लगभग 62 करोड़ रुपए प्राप्त होने का अनुमान है जो कुल राजस्व आय का लगभग 6.41 प्रतिशत है। इसके अन्तर्गत निम्न मदें शामिल हैं :- (अ) सामान्य सेवायें

(ब) सामाजिक व सामुदायिक सेवायें (ग) आर्थिक सेवायें (घ) ब्याज प्राप्तियां, लाभांश व लाभ।
(i) सामान्य सेवायें :- इनमें राज्य के अंग प्रशासनिक सेवायें ऋण सेवायें व राजकोषीय सेवाओं से प्राप्त होने वाली आय शामिल होती है। 1991-92 में इनमें लगभग 11.00 करोड़ रुपए की प्राप्तियां होने का अनुमान है।

(ii) सामाजिक व सामुदायिक सेवायें :- इनमें शिक्षा, स्वास्थ्य आवास आदि विभागों से प्राप्त होने वाली आय शामिल की जाती है। इन सेवाओं में लगातार वृद्धि होने से इस मद की आय में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। 1991-92 में 5.2 करोड़ रुपए प्राप्त होने का अनुमान है।

(iii) आर्थिक सेवायें :- ये सेवायें सरकार की आय का प्रमुख स्रोत हैं। इनमें सहकारिता, कृषि, वन, लघु सिंचाई, उद्योग, खनिज, परिवहन व संचार विभागों से प्राप्त होने वाली आय शामिल होती है। कुछ समय पहले तक वनों से प्राप्त आय का प्रमुख स्थान था। परन्तु अब वनों को तत्कालीन आय के लिए अधिकाधिक प्रयोग करना श्रेयष्कर नहीं समझा जाता।

वर्ष 1991-92 में सभी प्रकार की आर्थिक सेवायों से प्राप्तियां लगभग 41 करोड़ रुपये हैं।

(iv) ब्याज प्राप्तियां, लाभांश व लाभ : इस मद में 1992-93 में 5.00 करोड़ रुपये प्राप्त होने का अनुमान है।

(स) सहाय अनुदान

केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों को विकास कार्यों में सहायता देने के उद्देश्य से सहाय अनुदान देती है। हिमाचल प्रदेश को 1991-92 में इस मद में 506.4 करोड़ रुपये प्राप्त होने का अनुमान है जो कुल राजस्व आय का 50 प्रतिशत है। यह राशि लगातार बढ़ रही है परन्तु प्रतिशत कम हो रहा है।

(3) केन्द्र पर निर्भरता

आय के सभी स्रोतों पर एक नज़र डालने के बाद यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि कुल आय का 74 प्रतिशत से भी अधिक भाग केन्द्रीय सरकार से प्राप्त होता है जबकि राज्य के आन्तरिक स्रोत केवल 25 प्रतिशत राशि ही जुटा पाते हैं। स्पष्ट है कि हिमाचल प्रदेश केन्द्र पर अत्यधिक निर्भर है। यह निर्भरता तभी कम हो सकती है जब राज्य की अपनी आय बढ़े। ऐसा पर्यटन उद्योग व जल-विद्युत का विकास करके ही किया जा सकता है। इसके लिए बड़ी मात्रा में विनियोग की आवश्यकता है। भारत सरकार व राज्य सरकार के पास पूंजी का अभाव देखते हुए निजी क्षेत्र को पूंजी निवेश को आमंत्रित करने के अलावा अन्य विकल्प नहीं। जनता गरीब है। कृषि व्यवसाय है। उत्पादन कम है अतः कृषि क्षेत्र में आय बढ़ाने की सम्भावना नहीं विद्युत, पर्यटन, सीमेंट उद्योग निकट भविष्य में राज्य की आय बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभा सकेगा। निकट भविष्य में 1000 करोड़ रु० वार्षिक विद्युत परियोजनाओं से व 100 करोड़ रु० वार्षिक सीमेंट उद्योग से प्राप्त होने लगेगा। साथ ही अनुत्पादकीय व्यय को कम करके हम राज्य की वित्तीय निर्भरता को बहुत कम कर सकते हैं।

(4) व्यय (राजस्व लेखा)

वर्ष 1992-93 में राजस्व खाते में कुल व्यय 1126 करोड़ रुपये होने का अनुमान है। सामान्य सेवाओं व राजकोषीय सेवाओं पर 36.3 प्रतिशत सामाजिक व सामुदायिक सेवाओं पर 37.7 प्रतिशत व आर्थिक सेवाओं पर 25.7 प्रतिशत तथा शेष सहाय अनुदान पर व्यय करने का बजट में प्रावधान है। विभिन्न पदों पर व्यय निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

राजस्व व्यय-1992-93 (करोड़ रु० में)

क्र० सं०	व्यय	मद
1.	सामान्य सेवायें	
	(i) कर एकत्र करने पर	12.9
	(ii) राज्य के अंग	21.7
	(iii) राज्य राजकोषीय सेवायें	1.4
	(iv) व्याज व ऋण सेवायें	192.0
	(v) अन्य (प्रशासनिक सेवायों सहित)	180.6
	कुल	408.6
		(36.3%)
2.	सामाजिक सेवायें	
	(i) शिक्षा खेल कूद आदि	231.00
	(ii) स्वास्थ्य व परिवार कल्याण	91.6
	(iii) जलपूर्ति व सफाई	38.5
	(iv) आवास व शहरी विकास	4.9
	(v) सामाजिक कल्याण सेवायें	52.6
	(vi) अन्य	5.6
	कुल	424.2
		(37.7%)
3.	आर्थिक सेवायें	
	(ii) सहकारिता	6.9
	(iii) कृषि	88.8
	(iv) वन	77.6
	(v) ग्रामीण विकास	32.0
	(vi) सिंचाई व बाढ़ नियन्त्रण	14.7
	(vii) उद्योग व खनिज	11.5

क्र० सं०	मद	व्यय
	(viii) परिवहन व पर्यटन	35.5
	(ix) अन्य	22.0
	कुल	289.0 (25.6%)
4.	सहाय अनुदान व अंशदान	3.7
5.	कुल व्यय	1125.5

स्रोत : हिमाचल प्रदेश का संक्षिप्त बजट : 92-93

व्यय (पूँजी लेखा)

वर्ष 1991-92 में पूँजी लेखा में व्यय की सकल राशि 235.78 करोड़ रुपये का अनुमान है। 35.28 करोड़ रुपये की वसूली होगी अतः शुद्ध व्यय राशि 200.49 करोड़ रुपये होने का अनुमान है। इसका विवरण निम्नतालिका में दिया गया है। 1989-90 में लगभग 122 करोड़ व 1990-91 में 155.7 करोड़ रुपये व्यय किये गए।

मद	सामान्य सेवायें	सामाजिक सेवायें	आर्थिक सेवायें	कुल
शुद्ध व्यय राशि (करोड़ रु० में)	4.10	56.90	187.00	248.00

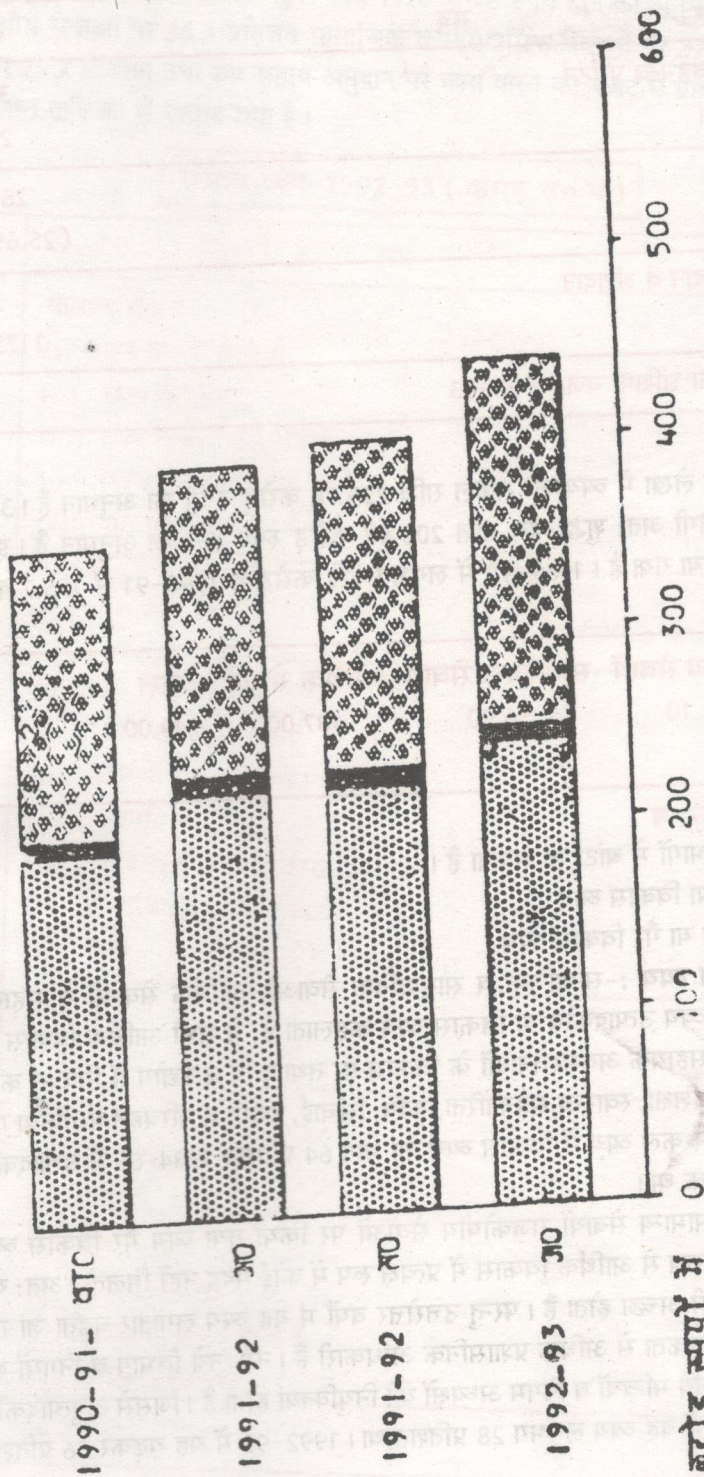
(5) व्यय का वर्गीकरण

समस्त व्यय को दो भागों में बांटा जा सकता है।

- (1) उत्पादकीय या विकास व्यय
- (2) अनुत्पादकीय या गैर विकास व्यय

उत्पादकीय या विकास व्यय :- सामाजिक व सामुदायिक सेवाओं, आर्थिक सेवाओं व सहायता अनुदान मदों पर किया गया व्यय उत्पादकीय या विकास व्यय कहलाता है, ये सभी आर्थिक विकास की मदें हैं, जो अर्थव्यवस्था की सहायक अवसंरचनाओं के विकास पर तथा कृषि व उद्योग में विकास कार्यों के लिए किया जाता है। इनमें शिक्षा, स्वास्थ्य सहकारिता, कृषि, सिंचाई, उद्योग व परिवहन पर किया गया व्यय शामिल है। 1992-93 में कुल व्यय में विकास व्यय का भाग 64 प्रतिशत 1984-85 में उत्पादकीय व्यय 72 प्रतिशत से भी अधिक था।

अनुत्पादकीय व्यय :- सामान्य सेवायों राजकोषीय सेवाओं पर किया गया व्यय गैर विकास व्यय होता है। अर्थात् इस व्यय से राज्य से आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष रूप में कोई मदद नहीं मिलती। अतः यह व्यय जितना कम करें उतना ही अच्छा होता है। परन्तु उत्तरोत्तर वर्षों में यह व्यय लगातार बढ़ता जा रहा है। राज्य में प्रशासनिक आवश्यकता से अधिक प्रशासनिक अधिकारी हैं। नये-नये विभाग व निगमों की स्थापना की जा रही है। इससे नये मन्त्रियों व निगम अध्यक्षों की नियुक्तियां होती हैं। जिससे अनुत्पादकीय व्यय बढ़ जाता है। 1984-85 में यह व्यय लगभग 28 प्रतिशत था। 1992-93 में यह बढ़कर 36 प्रतिशत से अधिक हो गया है।



केंद्रीय करों का भाग
सम्पत्ति तथा पूंजी संचालन पर कर
घरपूजों तथा श्रमागों पर कर



यह सच है कि यह व्यय प्रत्यक्ष रूप से विकास कार्यों को नहीं बढ़ाता परन्तु यह भी सच है कि कानून व्यवस्था की स्थिति बिगड़ने पर व प्रशासन पर मजबूत पकड़ न होने पर आर्थिक विकास कार्य कुशलता पूर्वक नहीं किए जा सकते। लोकप्रिय सरकार बनाने के बाद अनुत्पादकीय व्यय बढ़ा है, परन्तु आर्थिक विकास भी इसी अवधि में तेज गति से हुआ है। परोक्ष रूप में सारा विकास कार्य इन लोगों के माध्यम से ही होता है फिर भी लक्ष्य अनुत्पादकीय व्यय को कम से कम रखा होना चाहिए ताकि विकास कार्यों के लिए अधिक राशि उपलब्ध हो सके।

अभ्यास-प्रश्न

निवन्धात्मक प्रश्न

1. हिमाचल प्रदेश के बजट पर प्रकाश डालो व मुख्य विशेषताओं का वर्णन करो।
2. हिमाचल सरकार के कर राजस्व में कौन-कौन सी मदें हैं। किन्हीं 5 मुख्य मदों का वर्णन करो।
3. गैर कर राजस्व में कौन-कौन सी सेवायें शामिल हैं ? विस्तार से वर्णन करो।
4. हिमाचल सरकार अपनी आय किन मदों पर खर्च करती है। बताओ।

लघु उत्तर प्रश्न

1. बिक्री कर का विस्तार से वर्णन करो।
2. राज्य उत्पादन शुल्क से राज्य को कितनी आय प्राप्त होती है ? यह क्यों लगाया गया था ?
3. वनों से आय पर प्रकाश डालिए।
4. हिमाचल प्रदेश किस सीमा तक केन्द्र पर निर्भर है ? स्पष्ट करो।
5. उत्पादकीय व अनुत्पादकीय व्यय से आप क्या समझते हो ? विस्तार से बताओ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थान भरो

- (i) 1991-92 के बजट की राशि करोड़ रु० है।
- (ii) सहाय अनुदान कुल आय का प्रतिशत भाग है।
- (iii) हिमाचल की कुल आय का केन्द्रीय सरकार से प्राप्त होता है।
- (iv) व्यय से सर्वाधिक राशि सेवाओं पर नियत की गई।
- (v) पूंजी लेखा में कुल व्यय रु० निर्धारित किया गया।

सही (O) व गलत (x) के चिन्ह लगाओ।

- (i) बजट में आय से व्यय अधिक है।
- (ii) बजट में घाटा लगातार कम हो रहा है।
- (iii) भू-राजस्व राज्य आय का प्रमुख साधन है।
- (iv) उत्पादन शुल्क नशीले पदार्थों पर नहीं लगाया जाता।
- (v) अनुत्पादकीय व्यय लगातार बढ़ रहा है।

